डॉ॰ संगीता राय
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

पूर्वमेघ का कथानक :-

यक्ष अलकाधिपति कुबेर का सेवक था किन्तु अपनी प्रिया के प्रति अतिशय अनुराग के कारण वह कर्त्तव्यच्युत हो गया। अतः इसके फलस्वरूप एक वर्ष के लिए वह अलकापुरी से कुबेर द्वारा निर्वासित किया गया तथा वह रामगिरि पर्वत पर अपने शाप की अवधि व्यतीत करने लगा। इस प्रकार आठ मास समाप्त हुए। केवल चार मास और शेष थे, किन्तु आषाढ़ मास में बादल को एक पर्वत शिखर से टकराते देखकर वह बड़ा ही कातर हो गया और उसके अतीत जीवन की प्रणयात्मक स्मृतियाँ सजीव हेतु हो गयीं। वह अपनी प्रिया से मिलने के लिए उत्सुक हो उठा किन्तु शापवश वह विवश था। उसने मेघ को अपना दूत बनाकर अपना संदेश अपनी प्रिया के समीप पहुँचाने का विचार किया। यद्यपि वह समझता है कि मेघ धूम्र, प्रकाश, पानी एवं वायु का समवाय है। अतः वह संदेश ले जाने में असमर्थ है किन्तु कामार्त व्यक्ति विवेक शून्य हो जाते हैं। वे चेतन एवं अचेतन का भेद नहीं कर पाते —

" धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः ।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु ॥

यक्ष ने मेघ का विधिवत् स्वागत किया और अपना संदेश प्रिया तक पहुँचाने के लिए कहा – हे मेघ! इस समय शुभ शकुन हो रहे हैं, आप मेरे सच्चे मित्र हैं अतः आपको यह संदेश-कार्य करना ही है। आपको यहाँ से उत्तर की ओर जाना है। मार्ग में राजहंस आपके सहायक होंगे और ग्राम-वधूटियाँ तुम्हें सतृष्ण नेत्रों से देखेंगी :—

"कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलीन्ध्रामवन्ध्यां
तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मानसोत्काः।
आ कैलासाद्बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः
सम्पत्स्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहायाः॥

आगे चलकर आपको आम्रकूट पर्वत मिलेगा तथा इसके पश्चात् विन्ध्याचल के चरणों पर लेटी हुई रेवा नदी मिलेगी। वहाँ से आगे जामुन के वृक्षों से शोभायमान दशार्ण देश का आनन्द लेते हुए विदिशा में प्रवेश करके वेत्रवती का जलपान करते हुए "नीचैः पर्वत" पर कुछ विश्राम कर लेना —

"नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः।"

यक्ष आगे कहता है कि यद्यपि इसके पश्चात् आपका मार्ग कुछ टेढ़ा पड़ेगा किन्तु फिर भी तुम्हें उज्जयिनी अवश्य जाना है और वहाँ भगवान् शङ्कर की पूजा में सम्मिलित होना है। इस उज्जयिनी मार्ग में तुम्हें निर्विन्ध्या से भी मिलना है तथा अवन्ति देश में पहुँचकर उज्जयिनी में आनन्द

को लूटना। वहाँ शिप्रा की प्रातः कालीन वायु का सेवन कर गंभीरा नदी को पार करके देवगिरि पर्वत पर जाना और वहाँ भगवान् कार्तिकेय की पूजा करना, तत्पश्चात् चर्मण्वती को पार करके दशपुर की स्त्रियों को आनन्द देते हुए कुरुक्षेत्र पहुँचकर वहाँ सरस्वती नदी का जलपान करके अपने को पवित्र करना -

"तस्माद् गच्छेरनुकनखलं शैलराजावतीर्णा, जह्नोः
कन्यां सगर तनयस्वर्गसोपान पंक्तिम्"।

तत्पश्चात् चर्मण्वती को पार करके दशपुर की स्त्रियों को आनन्द देते हुए कुरुक्षेत्र पहुँचकर वहाँ सरस्वती नदी का जलपान करके अपने को पवित्र करना। यहाँ का आनन्द लेते हुए भगवान शङ्कर के चरणन्यास की परिक्रमा करते हुए क्रौञ्चरन्ध्र के देर से निकलकर उत्तर की ओर बढ़ते हुए आप कैलाश पर्वत तक पहुँच जायेंगे। उस कैलाश पर्वत पर ही बसी हुई अलकापुरी दिखायी देगी। यही अलका मेरी प्रिया का निवास स्थान है और इसे पहचानने में आपको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा।

—x—